केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन)
CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION
(An Autonomous Organisation Under the Ministry of Education, Govt. of India)

केमाशिबो /शैक्ष./उस(मंसिं)/ 2024 **दिनांक : 12.01.2024**

परिपत्र संख्या: शैक्षणिक -05/2024

केमाशिबो से संबद्ध सभी विद्यालयों के प्रमुख

विषय: 14-15 जनवरी 2024 को मकर संक्रांति का उत्सव मनाने के संबंध में।

संदर्भ: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का DO पत्र संख्या 1-10/2024-सीबीएसई दिनांक 11.01.2024

प्रिय प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या

जैसे-जैसे हम अपने देश की सांस्कृतिक विविधता और विरासत का उत्सव मनाने वाले त्योहारों के मौसम के निकट आते हैं, हमारी आम जनता और विशेष रूप से स्कूली बच्चों के लिए मकर संक्रांति जैसे त्योहारों के महत्व को आत्मसात करना अनिवार्य हो जाता है। यह त्योहार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का प्रतीक है और पूरे देश में विभिन्न नामों से मनाया जाता है। इस त्योहार को समझने के लिए हमारे जीवन में सूर्य की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करना आवश्यक है - प्रकाश, गर्मी और जीवन का प्रदाता। इसलिए, सूर्य को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पृथ्वी की जलवायु को प्रभावित करता है, जीवन को बनाए रखता है और तकनीकी प्रणालियों को प्रभावित करता है, जिससे यह हमारे अस्तित्व और प्रगति के विभिन्न पहलुओं के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

आदित्य मिशन की सफलता बड़े पैमाने पर मानवता की उन्नति और लाभ के लक्ष्य के साथ हमारे सौर मंडल के मूल की गहराई की खोज करने की हमारे देश की प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में कार्य करती है। इस मिशन से प्राप्त अंतर्दृष्टि अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी, उपग्रह संचार में सुधार और तकनीकी प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण व्यावहारिक निहितार्थ रखती है। आदित्य मिशन की सफलता वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष उत्साही लोगों की अगली पीढ़ी के बीच भी प्रेरणा उत्पन्न कर सकती है, जिससे सौर विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्रों के लिए एक सहज जुनून उत्पन्न हो सकता है।

मकर संक्रांति हमारी युवा पीढ़ी को भारत की विविधता, सांस्कृतिक विरासत और सौर विज्ञान के विषय में बताने का एक उपयुक्त अवसर है। मकर संक्रांति उत्सव सूर्य की गति, ऊर्जा और इसके कृषि संबंधी प्रभावों की वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि से संबंधित है, जो सूर्य कीरीट के आदित्य मिशन के अध्ययन और पृथ्वी की जलवायु और प्रौद्योगिकी पर इसके प्रभाव को प्रतिबिंबित करता है।

मकर संक्रांति के महत्व को ध्यान में रखते हुए, विद्यालयों को सलाह दी जाती है कि वे सौर विज्ञान के साथ अपने जटिल संबंधों को उजागर करते हुए मकर संक्रांति के सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करने के लिए 14-15 जनवरी 2024 को विद्यालयों के भीतर विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करें। मकर संक्रांति और आदित्य मिशन के महत्व पर एक संक्षिप्त लेख संलग्न है।

विद्यालयों को मकर संक्रांति के उत्सव की एक संक्षिप्त रिपोर्ट 17.01.2024 से पहले निम्नलिखित लिंक पर अपलोड करनी चाहिए:

https://forms.gle/GMEHocJNraohPy5LA

शुभकामनाओं सहित

डॉ. जोसफ इमानुवल
निदेशक (शैक्षणिक)

नीचे दर्शाए अनुसार निदेशालयों, संगठनों और संस्थानों के संबंधित प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के तहत सभी विद्यालयों को सूचना प्रसारित करने के अनुरोध के साथ प्रति:

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18 इंस्टीट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-16
2. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, बी-15, सेक्टर-62, इंस्टीट्यूशनल एरिया,नोएडा-201,309
3. सचिव, एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय (ईएमआरएस), जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार।
4. सचिव, सैनिक विद्यालय सोसायटी, कमरा नंबर 101, डी-1 विंग, सेना भवन, नई दिल्ली-110001
5. अध्यक्ष, ओडिशा आदर्श विद्यालय संगठन, एन-1/9, दूरदर्शन केंद्र के पास, पीओ सैनिक विद्यालय नयापल्ली, भुवनेश्वर, ओडिशा-751005
6. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110 054
7. सार्वजनिक निर्देश निदेशक (विद्यालय), केंद्र शासित प्रदेश सचिवालय, सेक्टर 9, चंडीगढ़ -160017
8. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्किम -737101
9. विद्यालय शिक्षा निदेशक, । अरुणाचल प्रदेश सरकार ईटानगर -791 111
10. शिक्षा निदेशक, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर - 744101
11. विद्यालय शिक्षा निदेशक, लद्दाख, कमरा नंबर 101-102, भूतल, परिषद सचिवालय, कुर्बाथांग, कारगिल - लद्दाख
12. विद्यालय शिक्षा निदेशक, आंध्र प्रदेश, तीसरी मंजिल, बी ब्लॉक, अंजनेय टावर्स, वीटीपीएस रोड, भीमाराजू गुट्टा, इब्राहिमपटनम, आंध्र प्रदेश - 521 456
13. निदेशक, केंद्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ईएसएसईएस प्लाजा, सामुदायिक केंद्र, सेक्टर-3, रोहिणी, दिल्ली
14. सेना शिक्षा के अतिरिक्त महानिदेशक, ए-विंग, सेना भवन, डीएचक्यू, पीओ, नई दिल्ली -110001
15. सचिव, एडब्ल्यूईएस रक्षा मंत्रालय (सेना) का एकीकृत मुख्यालय, एफडीआरसी बिल्डिंग नंबर 202, शंकर विहार (एपीएस के पास), दिल्ली कैंट -110010
16. अध्यक्ष, केमाशिबो के उप सचिव
17. सचिव/परीक्षा नियंत्रक/सभी निदेशक, केमाशिबो
18. केमाशिबो के सभी क्षेत्रीय निदेशकों/क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को अपने-अपने क्षेत्रों में बोर्ड के संबद्ध विद्यालयों के सभी प्रमुखों को भेजें।
19. सभी संयुक्त सचिव/उप सचिव/अवर सचिव/सहायक सचिव, केमाशिबो
20. सभी प्रमुख/प्रभारी, उत्कृष्टता केंद्र, केमाशिबो
21. प्रभारी आईटी एकक को इस अनुरोध के साथ कि इस परिपत्र को केमाशिबो की शैक्षणिक वेबसाइट पर डाला जाए
22. प्रभारी, पुस्तकालय
23. रिकॉर्ड फ़ाइल

निदेशक (शैक्षणिक)

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति एक त्योहार है जो सूर्य के अपने आकाशीय पथ पर मकर राशि में संक्रमण का प्रतीक है, और यह सामान्यत: 14 या 15 जनवरी को मनाया जाता है। खगोलीय दृष्टि से, मकर संक्रांति शीतकालीन संक्रांति के बाद, उत्तरी गोलार्ध में दिन के उजाले की लंबाई में क्रमिक वृद्धि का प्रतीक है।

खगोलीय एवं वैज्ञानिक महत्व

मकर संक्रांति का खगोलीय पहलू मौसमी परिवर्तनों के साथ संरेखित होता है, जो समय की चक्रीय प्रकृति और कृषि चक्रों के साथ खगोलीय घटनाओं के अंतर्संबंध पर जोर देता है, जो भारत के सांस्कृतिक ताने-बाने में गहराई से निहित है। शीतकालीन संक्रांति की समाप्ति पृथ्वी के अक्षीय झुकाव में इसकी भूमिका और विभिन्न गोलार्धों में दिन के उजाले की लंबाई के साथ इसके संबंध के कारण वैज्ञानिक महत्व रखती है।

जैसे ही पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, उसकी धुरी का झुकाव ऋतु परिवर्तन का कारण बनता है। शीतकालीन संक्रांति का अंत एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतीक है जब उत्तरी गोलार्ध सूर्य की ओर वापस झुकना शुरू कर देता है। इस क्रमिक बदलाव के परिणामस्वरूप उत्तरी गोलार्ध में दिन के घंटों में वृद्धि और रात के घंटों में कमी आती है।

वैज्ञानिक महत्व शीतकालीन संक्रांति के बाद दिन के उजाले के समय के धीरे-धीरे बढ़ने में निहित है। जैसे-जैसे दिन बड़े होते जाते हैं, विभिन्न क्षेत्रों तक पहुँचने वाली सूर्य की रोशनी की मात्रा बढ़ती जाती है, जिससे तापमान और मौसम के पैटर्न में परिवर्तन शुरू हो जाता है। सूर्य के प्रकाश के संपर्क में यह परिवर्तन विभिन्न प्राकृतिक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संक्रांति के बाद बढ़ी हुई धूप धीरे-धीरे तापमान बढ़ाती है, जिससे हिम और बर्फ का पिघलना शुरू हो जाता है, जो वसंत के आगमन का संकेत देता है। लंबे दिन के उजाले घंटे वनस्पतियों और जीवों दोनों में परिवर्तन को गति देते हैं, जिससे फूल, प्रवास और प्रजनन चक्र जैसी गतिविधियां प्रभावित होती हैं। कृषि क्षेत्रों में, यह संक्रमण फसल की वृद्धि के लिए प्रचुर मात्रा में सूर्य के प्रकाश का लाभ उठाते हुए, कटाई के मौसम की तैयारी का प्रतीक है। इसके अलावा, संक्रांति के बाद विस्तारित दिन की रोशनी मानव कल्याण को प्रभावित कर सकती है, सूर्य के प्रकाश के संपर्क में वृद्धि के कारण मन, ऊर्जा स्तर और दैनिक दिनचर्या प्रभावित हो सकती है।

सांस्कृतिक महत्व

यह त्योहार इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वसंत के आगमन का प्रतीक है, जो परंपरागत रूप से नई शुरुआत, समृद्धि और फसल के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है। इसे आध्यात्मिक प्रथाओं और अनुष्ठानों के लिए एक शुभ समय माना जाता है, विशेष रूप से गंगा जैसी पवित्र नदियों में स्नान करने के लिए, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यह किसी के पापों को नष्ट करता है और आशीर्वाद लाता है।

मकर संक्रांति मुख्यतः फसल उत्सव है। यह वह समय है जब किसान अच्छी फसल के लिए आभार व्यक्त करते हैं और आने वाले महीनों में समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। यह त्यौहार भारत के विभिन्न राज्यों में सांस्कृतिक महत्व रखता है और इसे अलग-अलग नामों और रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। पतंग उड़ाना इस समय के दौरान एक लोकप्रिय गतिविधि है, खासकर गुजरात और राजस्थान जैसे राज्यों में, जहां रंग-बिरंगी पतंगें आकाश को भर देती हैं, जो खुशी और वसंत के आगमन का प्रतीक हैं। अलाव जलाना पंजाब में लोहड़ी उत्सव का एक केंद्रीय हिस्सा है जो संक्रांति के समान है। लोग अलाव के चारों ओर इकट्ठा होते हैं, प्रार्थना करते हैं, पारंपरिक गीत गाते हैं और भांगड़ा और गिद्दा जैसे लोक नृत्य करते हैं। यह समुदायों के एक साथ आने, रेवड़ी, गजक और पॉपकॉर्न जैसी मिष्ठान साझा करने और शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करने का समय है। लोहड़ी धार्मिक और सामाजिक बाधाओं को पार कर लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देता है। यह एक ऐसा त्योहार है जो परिवारों, मित्रों को एक साथ लाता है।

और पड़ोसी फसल के मौसम की सामूहिक खुशी मनाते हैं। लोहड़ी धार्मिक और सामाजिक बाधाओं को पार कर लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देती है। यह एक ऐसा त्योहार है जो फसल के मौसम की सामूहिक खुशी मनाने के लिए परिवारों, मित्रों और पड़ोसियों को एक साथ लाता है।

तमिलनाडु में पोंगल चार दिनों तक चलने वाला धन्यवाद त्योहार है जो सूर्य और मवेशियों को समर्पित है, जो उन्हें सफल फसल में उनके योगदान के लिए धन्यवाद देता है। पहले दिन, भोगी पोंगल में घरों की सफाई की जाती है और एक नई शुरुआत का संकेत देने के लिए पुरानी वस्तुओं को त्याग दिया जाता है। दूसरे दिन, सूर्य पोंगल में ताजे कटे हुए चावल को दूध और गुड़ के साथ उबालना सम्मिलित है, जो प्रचुरता और समृद्धि का प्रतीक है। यह त्योहार एकता और रिश्तों के नवीनीकरण पर जोर देता है। परिवार और मित्र उत्सव मनाने, उपहारों का आदान-प्रदान करने और पारंपरिक भोजन साझा करने के लिए एक साथ आते हैं। यह सांस्कृतिक प्रदर्शन, संगीत और नृत्य का भी समय है, जो सामुदायिक संबंधों को मजबूत बनाता है।

सौर प्रयासों में भारत की शानदार जीत

भारत का सौर मिशन आदित्य, जिसका नाम सूर्य के नाम पर रखा गया है, अपनी ऊर्जा रणनीति के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में सौर ऊर्जा के दोहन के लिए देश के समर्पण का उदाहरण देता है। आदित्य एक महत्वाकांक्षी पहल है जो नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, विशेष रूप से सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के भारत के व्यापक लक्ष्य के अनुरूप है। आदित्य सोलर मिशन का लक्ष्य देश में सौर प्रौद्योगिकियों की तैनाती को और बढ़ाना है। यह मिशन सौर ऊर्जा में अनुसंधान और विकास को आगे बढ़ाने, दक्षता बढ़ाने और लागत कम करने के लिए नवाचारों पर जोर देने पर केंद्रित है।

शैक्षिक उद्देश्यों के लिए मकर संक्रांति और सौर विज्ञान का संलयन

मकर संक्रांति को एक शैक्षिक मंच के रूप में उपयोग करने से विद्यार्थियों को सौर विज्ञान और पृथ्वी-सूर्य संबंधों के विषय में जानकारी मिल सकती है, जिससे आदित्य मिशन से जुड़ी चर्चाओं के माध्यम से भारत के सौर अन्वेषण प्रयासों के विषय में जिज्ञासा बढ़ सकती है। मकर संक्रांति का उत्सव सूर्य की गति, ऊर्जा और इसके

कृषि संबंधी प्रभावों की वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि से संबंधित है, जो सूर्य के किरीट के आदित्य मिशन के अध्ययन और पृथ्वी की जलवायु और प्रौद्योगिकी पर इसके प्रभाव को प्रतिबिंबित करता है। विद्यालयों द्वारा निम्न सुझाई गई गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं:

- **कार्यशालाएँ और सेमिनार**: इन त्योहारों के खगोलीय महत्व को समझाते हुए, इन उत्सवों के पीछे के सौर विज्ञान को स्पष्ट करते हुए कार्यशालाओं का आयोजन करें। विद्यार्थियों को चर्चाओं और प्रस्तुतियों में सम्मिलित करने के लिए विद्वानों और विशेषज्ञों को आमंत्रित करें।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रम**: सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करें जहां विद्यार्थी जहां भी संभव हो, वैज्ञानिक पहलू को सम्मिलित करते हुए, इन त्योहारों से जुड़े पारंपरिक नृत्यों, गीतों और नाटकों का प्रदर्शन करके सक्रिय रूप से भाग ले सकें।
- **कला एवं शिल्प गतिविधियाँ**: कला और शिल्प सत्रों को प्रोत्साहित करें जहां विद्यार्थी इन त्योहारों से संबंधित पारंपरिक शिल्प बना सकते हैं, साथ ही सौर गतिविधियों के संबंध में उनके महत्व पर चर्चा भी कर सकते हैं।
- **निबंध लेखन प्रतियोगिताएँ**: विद्यार्थियों को सूर्य, मकर संक्रांति और आदित्य मिशन की उपलब्धियों पर आधारित निबंध लेखन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। यह इन अवधारणाओं के विषय में उनकी समझ को मजबूत करते हुए रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।

****